माता मरियम के पहनावे पर पहचान की राजनीति

- **डॉ जोसफ मरियानुस कुजूर**

लगभग पिछले दो महीनों से झारखण्ड के राजनीति के केंद्र रांची में माता मरियम का आदिवासी पहनावा सुर्ख़ियों में रहा. मामले ने जोर पकड़ा हालांकि मामला शांत हो चुका लगता था पर रैलियों और प्रदर्शनों ने इस मुद्दे को ज्वलंत बनाए रखने में कोई कसर नहीं छोड़ी. दूसरी तरफ ओरांव-सरना और चर्च के बीच तनाव कम करने का प्रयास जारी है पर मामला अभी पूरी तरह ठंडा नहीं हुआ है. सरना के एक छोटे से समूह द्वारा किया विरोध प्रदर्शन अन्य सरना संगठनों के जुड़ने के बाद बहुत बड़ा मुद्दा बन गया है. आश्चर्य की बात है कि इस मामले पर अभी तक किसी राजनीतिक दल ने कोई वक्तव्य जारी नहीं किया. लेकिन इस मौन का यह अर्थ कतई नहीं निकालना चाहिए की इस मामले में कोई राजनीति नहीं हो रही.

दरअसल ओरांव-सरना समाज के कुछ समुदायों ने यह दावा किया कि लाल बॉर्डर की साडी उनकी 'पारम्परिक वस्त्रशैली' है इसलिए जब वे एक विदेशी महिला मरियम माता को लाल बॉर्डर की साडी में दिखाया गया तो इससे उनकी धार्मिक भावनाए आहत हुई है. उन्होंने यह भी दावा किया कि माता मरियम का आदिवासी रूप सरना धर्म के लोगों को इसाई बनने के लिए प्रेरित करेगा. उन्होंने यह भी दावा किया कि आज से सौ साल बाद आदिवासी माता मरियम को इस रूप में देखते हुए यह मानने लगेंगे कि वह वास्तव में एक आदिवासी महिला ही थी इसलिए उन्हें आदिवासी परिधान में दिखाने से धर्मांतरण की संख्या और भी बढ़ेगी.

लेकिन ओरांव के इस समूह की मान्यताओं के आलोचक तर्क रखते हैं कि ' आधुनिक' ओरांव जो शर्ट-पेंट सरीखे पाश्चात्य वस्त्र पहनते हैं अंग्रेजों के भारत छोड़ने के 66 साल भी अंग्रेजों की तरह नहीं दिखाई देते. चर्च प्राधिकारियों का दावा है की आदिवासी-इसाई भी उतने ही आदिवासी हैं जितने कि सरना-आदिवासी इसलिए उन्हें भी लाल बॉर्डर की साडी पहनने का वही हक़ है जैसा की एक सरना-आदिवासी को. चर्च यह भी दावा करता है कि इस छोटे से मुद्दे को कुछ 'निहित स्वार्थी तत्वों' ने अपने राजनीतिक स्वार्थों के लिए इतना तूल देकर आम जनता का ध्यान - विकास, ज़मीन के हक़, वनों की कटाई, खान के अवैध उत्खनन, निरंकुश औद्योगीकरण, भ्रष्टाचार और क्षेत्रीय संसाधनों की लूट- से हटाने के लिए किया है.

दरअसल विरोध, प्रदर्शन, दावा, विरोध-प्रतिरोध-बातचीत और इन सब का विफल हो जाना पहचान की राजनीति उसकी अवधारणा और अभिव्यक्ति के लिए बहुत लाभप्रद होता है. वैसे पहचान हमेशा परिस्थिति पर ही निर्भर होती है जो कभी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक कारको पर आधारित होती हैं. पहचान का ये आधार और अभिव्यक्ति अंदरूनी और बाहरी दोनों ही लोगों के द्वारा सन्दर्भ के अनुसार अपनी सुविधा के हिसाब से तय किये जा सकते हैं. लेकिन कुछ ऐसे सवाल हैं जिनका झारखंड के मौजूदा संकट के सन्दर्भ में विश्लेषण किया जाना ज़रूरी है: ओरांव समुदाय में कौन हैं? क्या गैर-सरना ओरांव जैसे ओरांव – इसाई केवल इसलिए ओरांव नहीं हैं क्योंकि वे इसाई हैं? यदि ओराओं-इसाई अपने धार्मिक भेद के बाद भी उतने ओरांव ही हैं तब उन्हें ओरांव संस्कृति के आंतरिक पक्ष और बाहरी स्वरुप को अपनाने में क्या परेशानी है? यदि ओरांव समाज में इतनी ही साम्यता है तो फिर आसाम और अंडमान द्वीप समूह में सरकार उन्हें आदिवासी क्यों नहीं मानती? और जो ओरांव पारंपरिक धर्म का पालन करते हैं वह सरना धर्म है या ओरांव क्योंकि जब अनेक जनजातियाँ हैं तो आदिवासी धर्म भी अनेक हैं, ओरांव उनमें से एक हैं. क्या लाल बॉर्डर की साडी ओरांव संस्कृति का अनिवार्य भाग है जिसके बिना ओरांव संस्कृति और पहचान नष्ट हो जाएगी? अभी बहुत साल नहीं हुए बोल्विया में एक 'जनजाति' ने दावा किया कि उसका झंडा सदियों से उसकी परंपरा रहा है. लेकिन उनकी इस मान्यता के विरुद्ध कुछ लोगों ने सिद्ध किया की उनका यह झंडा कुछ सालों पहले ही उनके राजनीतिक और पहचान के संघर्ष के लिए बनाया गया था. पहचान क्या है? क्या यह स्थिर, रुकी हुई, स्थायी और अपरिवर्तनशील हैं?

मैं समझता हूँ कि संस्कृति और पहचान को स्थायी, अपरिवर्तनशील और जड़ समझने की मानसिकता और समझ और प्रस्तुति एक झूठी चेतना को जन्म देती है. आज ओरांव में लाल बॉर्डर की साडी पहनना एक संस्कृति का एक अंग बन गया है परन्तु ओरांव पहचान को संस्कृति के छोटे से भाग में देखना कतई ठीक नहीं और यह जिद केवल समय विशेष की बात है. इसे पहचान के लिए अनिवार्य मनवाने की जिद समस्या उत्पन्न करती हैं और यह दोनों धर्मों के बीच साम्यता, रिश्ते, अपनेपन की संस्कृति और पहचान के बीच दीवार खड़ी कर देती है. गौरतलब है कि झारखण्ड का ओरांव समुदाय चाहे वह सरना हो या इसाई वह विस्थापन, प्रवास, और छोटा नागपुर में विस्थापन का एक ही इतिहास है. इन दोनों की नातेदारी, त्यौहार, रीति-रिवाज़ और चिन्ह कुछेक अंतर को छोड़ दिया जाए तो एक ही हैं.

यह लगभग १६० साल पहले की बात है जब छोटानागपुर के कुछ ओरांव ने ईसाई धर्म को अपनाया जिसके फलस्वरूप ओरांव इसाई समुदाय का अभ्युदय हुआ. ये नए धर्मान्तरित लोग इसाई धर्म के पालन के साथ-साथ ओरांव संस्कृति को भी जारी रखे हुए थे. इस तरह इन दोनों अर्थात इसाई धर्म और ओराओ संस्कृति में संवाद

कायम हुआ. ओरांव के इस परसंस्कृतिगृहण यानि नयी संस्कृति में समावेश होने के चलते ही आज यह समस्या उभरी है. लेकिन ये प्रक्रिया कोई नयी नहीं हैं. क्योंकि यह प्रक्रिया तो देश भर के आदिवासियों के हिन्दुकरण में भी हो रही है और देखा जाए तो परसंस्कृतिगृहण सिर्फ भारत की बात नहीं है बल्कि यह समस्त विश्व जैसे उत्तरी अमरीका, दक्षिणी अमरीका, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, और एशिया सभी जगह पर हो रहा है.

विभिन्न अध्ययन बताते हैं कि इसाई धर्म अपनाने के बाद भी बहुत से ओरांव अपने पारम्परिक रिवाजों का पालन मुख्यतः तीन कारणों के चलते करते हैं-सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक. ओरांव में से कुछ लोगों ने इसाई धर्म को इसलिए अपनाया क्योंकि उन्हें ओरांव समुदाय ने गाँव में किसी अप्रिय घटना होने पर उनपर जादू-टोने का इलज़ाम लगाकर समाज से बहिष्कृत कर दिया था. ओरांव समाज में बहिष्कार का मतलब जीतेजी मौत के अलावा कुछ और नहीं हैं.इस तरह के सामाजिक संकट से बचने के लिए उनके पास इसाई धर्म अपनाने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं था. कहीं आर्थिक स्थिति भी धर्मान्तरण का कारक बनी. चर्च ने हमेशा ही जन-कल्याणकारी गतिविधियाँ जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और विकास कार्यो को प्राथमिकता दी और इसाई संस्थाओ में हमेशा ही नए धर्मान्तरित लोगों को ही प्राथमिकता दी. साथ ही सरनाओं के इसाई धर्म अपनाने में आध्यत्मिक कारण भी महत्वपूर्ण रहा है. इसमे हम सिर्फ किसी एक कारण को अकेले धर्मांतरण का जिम्मेदार नहीं मान सकते क्योंकि इनमे से बहुत से कारणों ने मिलकर धर्मान्तरण को प्रोत्साहित दिया. कुछ वैयक्तिक अध्ययन (केस स्टडी) बताते हैं कि धर्मांतरण में उपरोक्त तीन कारणों की बिल्कुल भी भूमिका नहीं होती बल्कि केवल वैवाहिक सम्बन्ध ही धर्मांतरण का कारण बनता है.

सरना और इसाईयो के ऐसे रुसुर रिश्ते के बावजूद भी ऐसे कई मौके आये हैं जहाँ उन्होंने मिलकर लड़ाई लड़ी है जैसे कि झारखण्ड को पृथक राज्य बनाने का मुद्दा साथ ही ये दोनों तबके सशक्तिकरण और विकास के मुद्दे पर मिलकर लड़ रहे हैं.

इसलिए आज ये जो विवाद खड़ा किया गया है वह आदिवासी समाज खासकर ओरांव समुदाय को कोई लाभ पहुचाने के बजाय नुकसान पहुचाने वाला होगा. सबसे पहले यह मुद्दा ओरांव और अन्य हाशिए के समाज को उनके वास्तविक मुद्दों से भटकाने में कामयाब होगा जिससे साम्प्रदायिक ताकतें जो कि भू-माफिया, जंगल-माफिया और अन्य कोर्पोरेट घरानों से मिली हैं को ही फायदा पहुचाएगा. दूसरा यह मामला आने वाल चुनाव में समुदायों के ध्रुवीकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा.

पहली नज़र में महज़ धार्मिक दीखने वाले इस मुद्दे में धर्म का कुछ भी लेना-देना नहीं हैं. यह केवल एक राजनीतिक स्टंट है जो आदिवासी समुदाय को आपस में बांटकर खुद राज करना चाहता है इसमें सिर्फ पहचान

की राजनीति है. माता मरियम की मूर्ति पहचान की राजनीति का एक केंद्र बन गयी जिसने झारखण्ड के चर्च के आदिवासी की पहचान को ही खारिज कर दिया. इसमें मूल-निवासी की अवधारणा पर मनमाना कब्ज़ा कर लिया है. लोगो में प्रचारित यह डर कि १०० साल बाद लोग माता मरियम को आदिवासी पहनावे में देखकर उन्हें आदिवासी मानने लगेंगे और जिसके चलते उनमें धर्मान्तरण को बढ़ावा मिलेगा यह एक कल्पना मात्र है. लाल बॉर्डर की साडी ओरांव समुदाय की व्यापक संस्कृति कि एक छोटी से पहचान है इसलिए एक व्यापक पहचान को एक छोटी से पहचान में समेट लेना बहुत घातक है. यहाँ हमें ध्यान रखना होगा कि ओरांव के पास हिन्दूधर्म, इस्लाम और इसाई की तरह कोई लिखित परम्परा नहीं हैं इनके पास केवल मुंह-ज़बानी याद परम्परा ही है ऐसे में यदि उनमे लाल बॉर्डर की साडी की परम्परा है तो वह सरना और ओरांव-इसाई दोनों ही में हैं क्योंकि ये दोनों ही एक ही इतिहास और पुश्तैनी परम्परा से जुड़े हैं और वे एक ही संस्कृति और वैश्विक दृष्टिकोण को साझा करते हैं. यदि धार्मिक विभेदीकरण को छोड़ दिया जाए तो इनमें सभी सांस्कृतिक तत्व एकदम समान हैं इसलिए समस्त सांस्कृतिक पहचान को महज लाल बॉर्डर की साडी में समेत लेना पहचान की राजनीति के सिवाय कुछ और नहीं हैं. ओरांव धर्म को उदार, शांत, मैत्री और प्रेम से युक्त गुणों के लिए जाना जाता है इसलिए यदि इसमें घृणा, सामप्रदायिकता, बैर और बाँटने के तत्व शामिल होते दीखने लगे तो यह सम्पूर्ण ओरांव समुदाय के एक खतरे की घंटी है कि उनके बीच कोई बाहरी ताकतें घुसपैठ करने लगी हैं जिसका नतीजा बेहद नुकसानदायक होगा. इसलिए अभी बहुत देर नहीं हुई है हमें बाहरी ताकतों की राजनीति को समझते हुए ओरांव के एक ही इतिहास और एक ही जड़ को फिर कायम करना होगा ताकि हम एक बार और अपना बेहतर और उजला भविष्य बना सके, इसके लिए सरना-ओरांव और इसाई-ओरांव को मिलकर अपने अधिकारों, विकास और सशक्तिकरण की लड़ाई लड़ने के लिए साथ आना होगा.

***